**नई टेक्नोलॉजी का सहारा :** झालाना लेपर्ड रिजर्व में कैमरों से मिलने वाली फीड पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग का सफल ट्रायल

# जीव-जंगलों की निगरानी के लिए विवादों में रहे सर्विलांस सिस्टम से अब ऑटोमेटिक अलर्ट देने व बाघ-बघेरों की पहचान करने का दावा

**अर्पित शर्मा** | जयपुर

प्रदेश के जंगलों और जानवरों की निगरानी के लिए लगाया गया सर्विलांस सिस्टम विवादों में रहा है। ना तो इनसे फॉरेस्ट विभाग अनैतिक गतिविधियों पर लगाम लगा पाया ना ही शिकार पर। यहां तक की पिछले दिनों हुई आग या अन्य घटनाओं की जानकारी भी इनके जरिए नहीं मिली। ऐसे में, अब राजस्थान में जंगल और जानवरों को सुरक्षा देने के लिए इस सिस्टम में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग जैसी टेक्नोलॉजी का यूज किया जाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग (डीओआईटी) की ओर से झालाना लेपर्ड रिजर्व में इसका ट्रायल सफल हो गया है। अब इसे पूरे प्रदेश में लागू करने की तैयारी है। दावा है कि यह सिस्टम वास्तविक समय में घटना को खुद रजिस्टर्ड करने और संबंधित अधिकारियों को अलर्ट भेजने में सक्षम है। साथ ही एआई और इमेज प्रोसेसिंग के इस्तेमाल से भविष्य में बाघों की भी पहचान करना संभव होगा। यह खुद जंगल में एंट्री करने वाले वाहनों की नंबर प्लेट से पहचान करने के अलावा बाघ की पहचान कर नाम सहित लोकेशन व अन्य जानकारी उपलब्ध कराएंगे। गौरतलब है कि हाल ही में एमपी में काले हिरणों के शिकार की घटना सामने आई थी। राजस्थान में ऐसे मामलों से निपटने के लिए इस सिस्टम को लागू करने में तेजी से काम हो रहा है।

## अभी 5 जगह 56 टावर और 336 कैमरे निगरानी में

इस सिस्टम से जंगलों की निगरानी के लिए 56 टावर लगे हुए हैं। हर टावर पर 6 कैमरों के हिसाब से 336 कैमरे काम कर रहे हैं। इनमें 16 टावर मुकंदरा में, 16 सरिस्का में, 12 रणथंभौर में, 8 झालाना और 4 जंवाई में हैं। कैमरों से आने वाली फीड में एआई के जरिए सिस्टम खुद एनिमल व गतिविधियों पर नजर रखेगा और तत्काल फॉरेस्ट ऑफिसर को अलर्ट भेजेगा। पहले ये काम ऑपरेटर करते थे। सरकार ने हाल ही में टावर बढ़ाने की घोषणा भी की है।

## रणथंभौर, सरिस्का सहित 5 जगह शुरू होगा सिस्टम

डीओआईटी की ओर से पांच स्थानों रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, सरिस्का टाइगर रिजर्व, मुकंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व, झालाना लेपर्ड रिजर्व, जंवाई लेपर्ड रिजर्व में वन्यजीव निगरानी और अवैध शिकार विरोधी प्रणाली तीन साल से चल रही है। इसमें नाइट विजन क्षमता आधारित कैमरे और ड्रोन का उपयोग हो रहा है। इस सिस्टम में कैमरा फीड के माध्यम से 24x7 वन्यजीवों की आवाजाही और अवैध गतिविधियों की निगरानी की जा रही है। अब एआई और मशीन लर्निंग टेक्नोलॉ पर आधारित ऑब्जेक्ट डिटेक्शन और ऑब्जेक्ट आइडेंटिफिकेशन को स्वतः निगरानी के लिए कार्यान्वित किया जा रहा है।

**मॉनिटरिंग तक सही नहीं :** जब से ये कैमरे लगाए गए तभी से विवाद शुरू हो गया था। इन्हें पेरीफेरी के बजाय जंगलों के बीच में लगाया गया। कई बार लोकेशन सही नहीं मिलने से मॉनिटरिंग ठीक नहीं हो पाई। अक्सर कैमरे खराब रहे। शिकार सहित अन्य की घटनाओं की भी जानकारी नहीं दे पाए।

वाइल्डलाइफ सर्विलांस सिस्टम दुनिय का सबसे पहला सिस्टम है जो वन सं गतिविधियों की शुरुआती चेतावनी देता है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयो से जंगलों में मॉनिटरिंग और भी प्रमाणि होगी। इसका ट्रायल सफल रहा है।

**-संदेश नायक,** आयुक्त डीओआईटी

Dainik Bhaskar Pg 2, 17/5/22